अध्याय
अठारह

उपसर्ग और प्रत्यय

Prefix and Suffix

उपसर्ग

कुछ शब्दांश शब्दों के आरंभ में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता (परिवर्तन) लाते हैं। वे शब्द मूल शब्दों से बिल्कुल भिन्न अर्थ देते हैं। इनका अलग से प्रयोग नहीं किया जा सकता अर्थात् स्वतंत्र रूप से इसका कोई विशेष महत्व नहीं है अत: जो शब्दांश शब्दों के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता ला देते हैं अथवा उसके अर्थ को बदल देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

(i) हिंदी के उपसर्ग
(ii) संस्कृत के उपसर्ग
(iii) अंग्रेज़ी के उपसर्ग
(iv) उर्दू या अरबी-फ़ारसी के उपसर्ग

हिंदी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
कु	बुरा	कुढंग, कुसंग, कुचैला, कुचाल
दु	हीन, बुरा	दुबला, दुकाल, दुगना
उन	एक कम	उनसठ, उन्नीस, उनतीस
अ	के बिना	अथाह, अपार, अछूत, अचेत
अन	अभाव, निषेध	अनजान, अनहोनी, अनपढ़, अनबन, अनमोल
अध	आधा	अधकचरा, अधपका, अधमरा, अधखिला
औ	रहित, हीनता	औगुण, औघट, औतार
नि	रहित, निषेध	निडर, निकम्मा, निहत्था, निधड़क
भर	पूरा	भरपेट, भरपूर, भरसक

संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अधि	ऊपर, अधिकता, समीप	अधिकार, अधिनायक, अधिसंख्या
अप	बुरा, नीचे	अपयश, अपमान, अपकार, अपहरण
अ	नहीं, अभाव	अधर्म, अखंड, अबोध, अनाथ, अचर, अचल
अन	नहीं, अभाव, विपरीत	अनादर, अनादि, अनाचार, अनावश्यक, अनपढ़
अति	अधिक	अत्यधिक, अत्याचार, अत्यंत, अत्युत्तम

उत्	ऊँचा, श्रेष्ठ	उत्कर्ष, उत्तम, उत्थान, उत्साह
उप	छोटा, समीप, गौण	उपवास, उपमंत्री, उपदेश, उपकार
आ	पूर्ण, उलटा से लेकर	आजीवन, आमरण, आसन, आजन्म, आग्रह
कु	बुरा	कुकर्म, कुमार्ग, कुनीति
प्रति	हर एक, विरोध	प्रत्येक, प्रतिध्वनि, प्रतिभागी, प्रतिकूल
परि	सब ओर	परिक्रमा, परिचर्चा, परिवर्तन, परिणाम
वि	अलग, उलटा, विशेषता	विभाग, विज्ञान, विदेश, वियोग, विरोध
सम्	पूर्णता, अधिकता, निकटता	संपूर्ण, सम्मान, संगम, संतोष
स	साथ	सफल, सक्रिय, सपत्नी, सपरिवार
निर्	निषेध, रहित	निरपराध, निर्भय, निर्मल, निर्दोष
परा	उलटा, पीछे	पराभव, पराकाष्ठा, पराक्रम
स्व	अपना, निजी	स्वदेश, स्वार्थ, स्वतंत्र, स्वराज
दुस्	बुरा	दुष्चरित्र, दुष्कर, दुस्साहस, दुष्कर्म
निस्	बिना	निस्संदेह, निश्चय, निश्छल
दुर्	कठिन, बुरा	दुर्गम, दुर्दशा, दुर्बल, दुरुपयोग

अंग्रेज़ी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
हैड	प्रधान	हैडमास्टर, हैडक्लर्क
हॉफ़	आधा	हॉफ़ पैण्ट, हॉफ़ शर्ट
चीफ़	मुख्य	चीफ़ मिनिस्टर, चीफ़ सेक्रेटरी
असिस्टेंट	सहायक	असिस्टेंट टीचर, असिस्टेंट मैनेज़र
सब	उप, छोटा	सब-जज, सब-इंस्पैक्टर, सब-डिविज़न
वाइस	छोटा	वाइस चांसलर, वाइस प्रेसीडेंट
डिप्टी	छोटा	डिप्टी-कलक्टर, डिप्टी-इंस्पेक्टर

उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
बे	रहित	बेईमान, बेवकूफ़, बेइज़्ज़त, बेखटके
बा	साथ	बाकायदा, बाइज़्ज़त
ब	अनुसार, के साथ	बदौलत, बनाम, बखूबी
सर	मुख्य	सरकार, सरदार, सरहद
बद	बुरा	बदकिस्मत, बद्दुआ, बदतमीज़, बदनाम
ला	बिना	लावारिस, लापरवाह, लापता, लाजवाब

खुश	अच्छा	हमसफ़र, हमजोली, हमराज़
हम	साथ, समान	हर साल, हर एक, हर रोज़, हर तरफ़
हर	सभी	नालायक, नाचीज़, नासमझ, नापसंद
ना	नहीं	

प्रत्यय

कुछ शब्दांश शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्दों की रचना करते हैं। ऐसे शब्दों के अर्थ मूल शब्दों के अर्थ से बिल्कुल भिन्न होते हैं। इन शब्दांशों का स्वतंत्र रूप से कोई विशेष महत्व नहीं है। अतः हम कह सकते हैं कि-

जो शब्दांश शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं अथवा उसमें विशेषता ला देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

(क) कृत प्रत्यय (ख) तद्धित प्रत्यय

कृत प्रत्यय

वे प्रत्यय जो क्रिया धातु के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत प्रत्ययों से बनने वाले श 'कृदंत' कहलाते हैं।

(i) **करणवाचक संज्ञाएँ बनाने वाले**

कृत प्रत्यय	मूल शब्द	करणवाचक संज्ञाएँ
आ	भूल, झूल, घेर, ठेल	भूला, झूला, घेरा, ठेला
ऊ	झाड़, ढाल	झाड़ू, ढालू
न	झाड़, बंध, बेल	झाड़न, बंधन, बेलन
ना	बेल, गा, सो	बेलना, गाना, सोना
नी	चट, कतर, सूँघ	चटनी, कतरनी, सूँघनी

(ii) **विशेषण तथा कर्तृवाचक संज्ञाएँ बनाने वाले**

कृत प्रत्यय	मूल शब्द	विशेषण तथा कर्तृवाचक संज्ञाएँ
अनीय	निंद, स्मृ	निंदनीय, स्मरणीय
त	विद, कथ, श्रु	विदित, कथित, श्रुत
य	वाद, खाद्	वाद्य, खाद्य
अक्कड़	भूल, बूझ, घूम	भुलक्कड़, बुझक्कड़, घुमक्कड़
इयल	सड़, अड़	सड़ियल, अड़ियल
आक	तैर	तैराक
एरा	लूट	लुटेरा
आऊ	टिक, खा	टिकाऊ, खाऊ
औना	खेल, बिछ	खिलौना, बिछौना
हार	मरना, चलना, रखना	मरणहार, चलनहार, रखनहार

(iii) **भाववाचक संज्ञाएँ बनाने वाले**

कृत प्रत्यय	मूल शब्द	भाववाचक संज्ञाएँ
आ	घेर, छाय	घेरा, छाया
ई	हँस, बोल, कह-सुन	हँसी, बोली, कही-सुनी
अंत	भिड़, गढ़	भिड़ंत, गढ़ंत
आवा	बुला, दिखा, छल	बुलावा, दिखावा, छलावा

तद्धित प्रत्यय

जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण के साथ जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

तद्धित प्रत्ययों से बनने वाले शब्द-

(i) **कर्तृवाचक संज्ञाएँ बनाने वाले**

तद्धित प्रत्यय	मूलशब्द	कर्तृवाचक संज्ञाएँ
कार	साहित्य, पत्र	साहित्यकार, पत्रकार
हारा	लकड़ी, पानी	लकड़हारा, पनिहारा
ई	सुख, शास्त्र, तेल	सुखी, शास्त्री, तेली
एरा	लूट, साँप	लुटेरा, सपेरा
आर	सोना, लोहा,	सुनार, लुहार
इया	दुःख, मुख, रसोई	दुखिया, मुखिया, रसोइया
वाला	घर, गाड़ी, टोपी	घरवाला, गाड़ीवाला, टोपीवाला
वान	धन, गाड़ी, मूल्य	धनवान, गाड़ीवान, मूल्यवान

(ii) **भाववाचक संज्ञाएँ बनाने वाले**

तद्धित प्रत्यय	मूलशब्द	भाववाचक संज्ञाएँ
स्व	सर्व, वर्च	सर्वस्व, वर्चस्व
इमा	महा, गर	महिमा, गरिमा
त्व	मनुष्य, पशु, अपना	मनुष्यत्व, पशुत्व, अपनत्व
ता	सुंदर, गुरु, प्रभु, लघु	सुंदरता, गुरुता, प्रभुता, लघुता
आपा	मोटा, बूढ़ा	मोटापा, बुढ़ापा
नी	चाँद, नथ	चाँदनी, नथनी
आई	बुरा, भला, चतुर, अच्छा, पंडित	बुराई, भलाई, चतुराई, अच्छाई, पंडिताई
ई	गरम, नरम, खेत	गरमी, नरमी, खेती

* प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं– कृत...

अभ्यास-कार्य

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) हिंदी में मुख्य रूप से कितने प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग होता है?

दो ◯ तीन ◯ चार ◯

(ख) 'अपयश' में कौन-सा उपसर्ग है?

अप ◯ अ ◯ यश ◯

(ग) प्रत्यय शब्द में किस स्थान पर जुड़ता है?

मध्य में ◯ अंत में ◯ प्रारंभ में ◯

(घ) 'खिलौना' में कौन-सा प्रत्यय है?

आना ◯ ऊना ◯ 'औना' ◯

2. सही वाक्यों के सामने सही (✓) तथा गलत वाक्यों के सामने गलत (✗) का निशान लगाइए–

(क) शब्दों के आरंभ में जुड़ने वाले शब्दांश उपसर्ग कहलाते हैं।

(ख) शब्दों के अंत में जुड़ने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं।

(ग) उपसर्ग तीन प्रकार के होते हैं।

(घ) प्रत्यय पाँच प्रकार के होते हैं।

(ङ) 'चाँदनी' शब्द में 'नी' प्रत्यय लगा है।

3. उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

इमा उपसर्गों तद्धित शब्दांशों पराक्रम

(क) हिंदी में चार प्रकार के ________ का प्रयोग किया जाता है।

(ख) प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं– कृत तथा ________ प्रत्यय।

(ग) ________ का स्वतंत्र रूप से कोई महत्व नहीं होता।

(घ) ________ शब्द परा उपसर्ग लगाकर बना है।

(ङ) महिमा शब्द में ________ प्रत्यय लगा है।

4. निम्नलिखित उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाइए–

(क) अब _____ _____

(ख) प्रति _____ _____

(ग) औ _____ _____

(घ) दु _____ _____

(ङ) हम _____ _____

5. निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग करके लिखिए–

(क) चतुराई _____

(ख) सुनार _____

(ग) मिठास _____

(घ) दुखिया _____

(ङ) चिकनाहट _____

(च) मूल्यवान _____

(छ) पशुत्व _____

(ज) पत्रकार _____

(झ) महिमा _____

(ञ) सुखी _____

मौखिक प्रश्न

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताइए–

(क) हिंदी में उपसर्ग कितने प्रकार के होते हैं?

(ख) उर्दू के दो उपसर्गों के उदाहरण दीजिए।

(ग) प्रत्यय कितने प्रकार के होते हैं?

(घ) 'अनीय' प्रत्यय के दो उदाहरण दीजिए।

लिखित प्रश्न

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) उपसर्ग किसे कहते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ख) प्रत्यय किसे कहते हैं? प्रत्यय के भेदों के नाम लिखिए।

(ग) उपसर्ग के कितने भेद हैं? सभी के नाम लिखिए।

(घ) कृत तथा तद्धित प्रत्यय में अंतर स्पष्ट कीजिए।

अध्याय
उन्नीस

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

Idioms and Proverbs

मुहावरा एक वाक्यांश होता है। इसका प्रयोग सामान्य अर्थ में नहीं होकर एक विशेष अर्थ में होता है। इनके प्रयोग से भाषा सुंदर बनती है और उसमें चमत्कार आ जाता है। मुहावरे स्वतंत्र वाक्य के रूप में प्रयुक्त नहीं होते हैं। ये हमेशा क्रियापद के रूप में प्रयुक्त होते हैं और इनका प्रयोग वाक्य के भीतर होता है। निम्नांकित चित्र को देखिए और अर्थ समझिए-

भारतीय सेना ने शत्रु सेना की ईंट-से-ईंट बजा दी।
यहाँ ईंट-से-ईंट बजाने का अर्थ नष्ट-भ्रष्ट करने से है।

मुहावरे

कुछ बहुप्रचलित मुहावरे

अंधे की लकड़ी होना (एकमात्र सहारा होना)- रमेश ही अपने माता-पिता के बुढ़ापे में अंधे की लकड़ी के समान है।

अंग-अंग ढीला होना (बहुत थक जाना)- सारा दिन कड़ा परिश्रम करने के पश्चात् अब मेरा अंग-अंग ढीला हो रहा है।

अंग-अंग मुसकाना (बहुत प्रसन्न होना)- परीक्षा में प्रथम आने का समाचार सुनकर सविता का अंग-अंग मुस्करा रहा है।

अँगूठा दिखाना (साफ़ इनकार करना)- जब मैंने अपने मालिक से आर्थिक सहायता माँगी तो उसने मुझे अँगूठा दिखा दिया।

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना (अपनी प्रशंसा खुद करना)- जो व्यक्ति अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनता है, लोग उसका मज़ाक उड़ाते हैं।

अपना उल्लू सीधा करना (अपना मतलब निकालना)- राकेश यहाँ मुझसे मिलने नहीं, अपना उल्लू सीधा करने आया था।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना (सबसे अलग रहना)- राकेश कभी मिलकर काम नहीं करता, वह हमेशा अपनी खिचड़ी अलग पकाता है।

आकाश-पाताल एक करना (बहुत प्रयत्न करना)- इस नौकरी को पाने के लिए मैंने आकाश-पाताल एक कर दिया था।

आसमान सिर पर उठाना (बहुत शोर करना)- अध्यापक के बाहर जाते ही बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

आँखें खुलना (होश आना, सचेत होना)- जब सारा धन बर्बाद हो जाएगा, तभी तुम्हारी आँखें खुलेंगी।

आँखों का तारा (बहुत प्यारा)- बच्चे अपने माँ-बाप की आँखों के तारे होते हैं।

आग-बबूला होना (बहुत गुस्सा होना)– तुम तो छोटी-छोटी बातों पर आग-बबूला हो जाते हो।

ईद का चाँद होना (बहुत दिनों बाद दिखाई देना)– अरे, मोहन कहाँ रहते हो, तुम तो ईद का चाँद हो गए हो।

उँगली पर नचाना (वश में कर लेना)– गीता अपने पिता को उँगली पर नचाती है।

कमर कसना (किसी काम के लिए पूरी तरह तैयार होना)– राजेश ने वार्षिक परीक्षा के लिए अभी से कमर कस ली है।

कलई खुलना (पोल खुलना)– भरी सभा में तुम्हारी करतूतों की कलई खोलकर रख दूँगा।

कलेजा मुँह को आना (बहुत घबरा जाना)– दंगा-फ़साद देखकर मेरा कलेजा मुँह को आने लगता है।

काठ का उल्लू होना (बिल्कुल मूर्ख होना)– शशांक तो पूरा काठ का उल्लू है, उसे कुछ समझ नहीं आता।

खून का प्यासा होना (जान का दुश्मन होना)– तुम व्यर्थ ही मेरे खून के प्यासे हो रहे हो।

खून खौलना (अत्यंत क्रोध करना)– तुम्हारी जली-कटी बातें सुनकर मेरा खून खौलने लगता है।

गले मढ़ना (जबरदस्ती सौंपना)– तुम इस फटी हुई पुस्तक को मेरे गले क्यों मढ़ रहे हो?

गले लगाना (प्रेमपूर्वक अपनाना)– आतंकवाद का रास्ता छोड़ समाज में मिल-जुलकर रहने वालों को हमें सहर्ष गले लगाना चाहिए।

गले का हार होना (बहुत प्यारा होना)– आदिल अपने व्यवहार से सभी अध्यापकों के गले का हार बना हुआ है।

गुड़-गोबर करना (बने बनाए काम को बिगाड़ना)– अचानक वर्षा ने नेता जी का सारा कार्यक्रम गुड़-गोबर कर दिया।

घाव हरा होना (पुराना दुख याद आ जाना)– राजरानी के पति के अपहरण की खबर सुनकर सविता के घाव हरे हो गए।

घी के दीये जलाना (खुशियाँ मनाना)– क्रिकेट का विश्वकप जीतने पर सारे देश में घी के दीये जलाए गए।

घड़ों पानी पड़ना (बहुत शर्मिंदा होना)– जब सबके सामने रवि की पोल खुली तब उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

घोड़े बेचकर सोना (निश्चिंत होकर सोना)– चोर घर में घुस आए, क्या तुम घोड़े बेचकर सो रहे थे?

चकमा देना (धोखा देना)– चोर पुलिस को चकमा देकर भाग निकला।

चल बसना (मर जाना)– लाला रामलाल रात को चल बसे।

चूड़ियाँ पहनना (कायर होना)– क्या तुम लोगों ने चूड़ियाँ पहन रखी हैं, जो उसका अत्याचार सहन करते जा रहे हो?

छाती पर साँप लोटना (ईर्ष्या में जलना)– मेरी तरक्की को देखकर तुम्हारी छाती पर साँप क्यों लोट रहा है?

छक्के छुड़ाना (बुरी तरह हराना)– शिवाजी ने औरंगज़ेब के छक्के छुड़ा दिए थे।

छाती पर मूँग दलना (जान-बूझकर दुख देना)– यह अनचाहा मेहमान एक हफ़्ते से मेरी छाती पर मूँग दल रहा है।

जंगल में मंगल होना (सुनसान स्थान में आनंद का वातावरण)– अब तो दूर-दराज पहाड़ों पर भी रेस्तरां खुलने से जंगल में मंगल हो रहा है।

जान पर खेलना (प्राणों को संकट में डालना)– देश की रक्षा के लिए सैनिक जान पर खेल जाते हैं।

टेढ़ी खीर होना (काम कठिन होना)– एवरेस्ट पर चढ़ना टेढ़ी खीर है।

टाँग अड़ाना (दखल देना)– मेरे बनते हुए काम में टाँग अड़ाने की कोशिश मत करना।

तिल का ताड़ बनाना (छोटी-सी बात को बढ़ा-चढ़ा देना)– मीडिया वाले तिल का ताड़ बनाने की कला में माहिर हैं।

तलवे चाटना (खुशामद करना)– नौकरी पाने के लिए मैं किसी के तलवे नहीं चाट सकता।

थूककर चाटना (वचन से मुकरना)– मैं तुम पर विश्वास नहीं कर सकता क्योंकि थूककर चाटना तुम्हारी पुरानी आदत है।

थाली का बैंगन होना (सिद्धांतहीन व्यक्ति)– आजकल के नेता तो थाली के बैंगन हैं, उनका कोई सिद्धांत नहीं होता।

दाँतों तले उँगली दबाना (हैरान होना)– ताजमहल के सौंदर्य को देखकर पर्यटक दाँतों तले उँगली दबा लेते हैं।

दाल न गलना (तरकीब न चलना)– मेरे यहाँ तुम्हारी दाल नहीं गल सकती, कहीं और जाओ।

नौ-दो ग्यारह होना (भाग जाना)– नौकर मालिक के रुपए लेकर नौ-दो ग्यारह हो गया।

नाक में दम करना (बहुत तंग करना)– पुलिस ने पटरी पर बैठकर सामान बेचने वालों की नाम में दम कर रखा है।

पगड़ी उछालना (अपमानित करना)– तुमने भरी सभा में रामलाल की पगड़ी उछालकर अच्छा नहीं किया।

पहाड़ टूटना (भारी कष्ट आ पड़ना)– पिता की अचानक मृत्यु से राजीव लोचन पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा है।

लोहा लेना (डटकर मुकाबला करना)– हमारी सेना शत्रु से लोहा लेने को पूरी तरह से तैयार है।

लाल-पीला होना (बहुत क्रोधित होना)– तुम भी अजीब हो, इतनी छोटी-सी बात पर लाल-पीले हो रहे हो।